क्रोधात् =क्रोध से; **भवति** =होता है; **संमोहः** =पूर्ण मोह; **संमोहात्** =संमोह से; **स्मृतिविभ्रमः** =स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है; **स्मृतिभ्रंशात्** =स्मृति के भ्रमित हो जाने से; **बुद्धिनाशः** =बुद्धिनाश; **बुद्धिनाशात्** =बुद्धिनाश से; **प्रणश्यति** =अधःपतन होता है।

अनुवाद

क्रोध से मोह की उत्पत्ति होती है और मोह से स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है; स्मृति-भ्रम से बुद्धिनाश और बुद्धिनाश से संसारकूप में फिर से पतन हो जाया करता है।।६३।।

तात्पर्य

कृष्णभावना के विकास से यह ज्ञान होता है कि प्रत्येक वस्तु का भगवत्सेवा में उपयोग किया जा सकता है। जो कृष्णभावना के तत्त्व को नहीं जानते, वे ही बाह्यरूप से प्राकृत वस्तुओं को त्यागने का प्रयत्न करते हैं। यही कारण है कि मुमुक्षु होने पर भी वे वैराग्य को प्राप्त नहीं कर पाते। दूसरी ओर, कृष्णभावनाभावित वैष्णव प्रत्येक वस्तु को भगवत्सेवा में लगाने में कुशल होता है। इस गुण के कारण ही वह माया के आधीन नहीं होता। उदाहरणार्थ, निर्विशेषवादी की धारणा में निर्विशेष होने से परतत्त्व श्रीभगवान् भोजन नहीं कर सकते। इसलिए वह स्वादु भोजन को त्यागने का प्रयत्न करता है। इसके विपरीत, भक्त जानता है कि श्रीकृष्ण परम भोक्ता हैं तथा भक्तिभाव से समर्पित नैवेद्य को अवश्य स्वीकार करते हैं। अतः स्वादिष्ट भोजन को भगवत्-निवेदित करके वह स्वयं भी उनके प्रसाद को ग्रहण करता है। इस प्रकार भक्त के लिए सभी कुछ भक्तिवर्धक बन जाता है, जिससे परमार्थ से गिरने का भय नहीं रहता। भक्तगण कृष्णभावना से भावित होकर प्रसाद खाते हैं, जबकि अभक्त प्राकृत समझ कर उसका तिरस्कार कर देते हैं। कृत्रिम (बाह्य) त्याग करने वाले ऐसे निर्विशेषवादी जीवन के आस्वादन से वंचित ही रह जाते हैं; इस कारण मन की तुच्छ उत्तेजना भी उन्हें फिर संसारकूप में गिरा देती है। कहा जाता है कि मुक्ति के स्तर तक पहुँच जाने पर भी ऐसा जीव फिर गिर जाता है, क्योंकि उसे भक्तियोग का आश्रय नहीं है।

24.2

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।।६४।।

राग =आसक्ति (और); **द्वेष** =द्वेष से; **वियुक्तैः** =मुक्त; **तु** =तो; **विषयान्** =इन्द्रियविषयों को; **इन्द्रियैः** =इन्द्रियों द्वारा; **चरन्** =भोगता हुआ भी; **आत्मवश्यैः** =अपने वश में की हुई; **विधेयात्मा** =संयमी स्वाधीनता वाला; **प्रसादम्** =भगवत्कृपा को; **अधिगच्छति** =प्राप्त करता है।

अनुवाद

जो पुरुष संयम का अभ्यास करता हुआ इन्द्रियों को वश में कर लेता है, वह